महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का 'बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह स्मृति–समारोह', कानपुर (दिनांक 27 अक्टूबर, 2015) के अवसर पर सम्बोधन

मान्यवर श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी, श्री आदित्य शंकर जी वाजपेयी, श्री रमाकांत जी मिश्र, श्री कर्नल एस0एन0 पांडेय जी, श्री जगत वीर सिंह द्रोण जी, श्री श्याम अरोड़ा जी, श्री बी0 के0 लाहोटी जी, श्री ईश्वर चंद्र जी गुप्त, बी0एन0एस0डी0 शिक्षा निकेतन इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ0 अंगद सिंह जी, मीडिया–प्रतिनिधिगण, बहनों एवं भाइयों।

'बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी के 22वें स्मृति–समारोह में आपने मुझे आमंत्रित किया है, इसके लिए आप सबके प्रति आभारी हूँ।

मित्रों, बिहार प्रान्त के राज्यपाल पद की शपथ लेने के बाद, अपने गृह–नगर कानपुर की मेरी यह पहली यात्रा है। मैं, और पहले आपके बीच आना चाहता था, किन्तु विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी आत्यंतिक व्यस्तता के कारण, मुझे समय निकालने में काफी कठिनाई हो रही थी। आप सभी अवगत हैं, बिहार में विधान सभा निर्वाचन प्रगति पर है। तथापि, आपके प्रेम और आग्रह के वशीभूत मुझे एक दिन का समय निकालना पड़ा। आखिर, घर जो आना था। अपनों का प्यार खींच ही लाता है।

मित्रों, आप सभी जानते हैं, हम आज जिनका 'स्मृति समारोह' आयोजित कर रहे हैं, वे एक युगद्रष्टा और युगस्रस्टा महापुरूष थे। राष्ट्रीय चेतना उनमें कूट–कूट कर भरी थी तथा सामाजिक समरसता के वे प्रबल आग्रही थे। अपने सामाजिक जीवन में स्व0 नरेन्द्रजीत बाबू बराबर दीनों, पीड़ितों अभिवंचितों, दलितों आदि के हितों और कल्याण के लिए प्रयासरत रहे। नरेन्द्रजीत बाबू प्रखर राष्ट्रभक्त, निष्काम कर्मयोगी और अभिवंचितों के प्रबल हितैषी थे– ऐसा हम कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अंग्रेज कवि Longfellow (लांगफेलो) ने कहा था कि–

"Lives of great men all remind us, we can make our lives sublime, and, departing, leave behind us, footprints on the sands of time."

महापुरूषों के जीवन का अनुसरण कर हम एक स्वस्थ और सुदृढ़ देश और समाज का नव–निर्माण कर सकते हैं और समय–रेत पर अपने भी पद–चिह्न छोड़ सकते हैं। शास्त्रों में भी कहा गया है –'महाजनो येन गतः सा पंथाः।' निहितार्थ यह कि हम बड़े तभी बन सकते हैं, जब हम महापुरूषों के बताये मार्ग का अनुसरण करें। समय की रेत पर जो अपने पद–चिह्नों की छाप छोड़ जाते हैं, समाज उन्हें सर्वदा अभिवंदित करता है, उनकी पूजा करता है। नरेन्द्र बाबू ने भी काल के कपाल पर अपनी छाप छोड़ने में कामयाबी हासिल की, यही वजह है कि वे कालजयी बन पाये।

नरेन्द्रजीत बाबू ने 02 महाविद्यालयों, 05 इन्टर कॉलेजों एवं 02 कन्या महाविद्यालयों की स्थापना कर उनका कुशल संचालन सुनिश्चित कराया। ये सभी शिक्षण–संस्थान उत्तरप्रदेश के सुविख्यात शिक्षण–संस्थानों में से एक हैं। कानपुर हिन्दू अनाथालय के अध्यक्ष के रूप में भी नरेन्द्रजीत बाबू की सेवाएँ अविस्मरणीय हैं। पाँच पुस्तकालय, तीन धर्मार्थ चिकित्सालय आदि संस्थाएँ भी नरेन्द्र बाबू की अमर कीर्तियाँ हैं। मतलब यह कि समाज के हर महत्त्वपूर्ण प्रक्षेत्र–शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज–कल्याण – सबमें नरेन्द्रजीत बाबू की सेवाएँ इस बात का सबूत हैं कि मनुष्य अगर अपने जीवन को अगर समाज और राष्ट्र के प्रति न्योछावर कर देता है, तो उसकी स्मृतियाँ अमिट हो जाती हैं, वह व्यक्ति अमर हो जाता है। आज हम नरेन्द्रजीत बाबू के 'स्मृति–पर्व' के अवसर पर अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हैं और यह कहना चाहते हैं कि–

''तुम जीवित थे तो सुनने को दिल करता था
तुम चले गये तो गुनने को दिल करता है।
तुम सिमटे थे तो सहमी–सहमी आँखें थीं।
तुम बिखर गये तो चुनने को दिल करता है।''

–मित्रों, आज के 'स्मृति–समारोह' में आइये हम सभी नरेन्द्रबाबू के अनमोल विचारों के मोती चुनकर उन्हें संग्रहित करें तथा देश और समाज की बेहतरी के लिए दृढ़ संकल्पित हों, उनके सपनों को साकार करने की दिशा में अग्रसर हों।

आपने मुझे इस समारोह में आमंत्रित किया, पुनः एक बार अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मित्रों, आपमें से बहुतेरों के शुभकामना–संदेश, राज्यपाल के रूप में नियुक्ति के उपरांत, मुझे मिले थे। उन्हें मैंने उत्तरित कर दिया है, परन्तु इस समारोह के माध्यम से भी मैं अपने समस्त शुभैषियों को साधुवाद देता हूँ।

आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद !

जय हिन्द।

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।